वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2540) 370 अंक : 10

चेतन तू तिहुँकाल...

चेतन तू तिहुँकाल अकेला।
नदी नाव संजोग मिलैं ज्यों, त्यों कटुँब का मेला।।टेक।।
यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला।
सुख संपत्ति शरीर जलबुदबुद, विनशत नाहीं बेला।।
चेतन तू तिहुँकाल... ।।1।।
मोह मगन आतम गुन भूलत, परि तोहि गल जेला।
मैं मैं करत चहूँ गति डोलत, बोलत जैसे छेला।।
चेतन तू तिहुँकाल... ।।2।।
कहत 'बनारसी' मिथ्यामत तज, होय सुगुरुका चेला।
तास वचन परतीत आन जिय, होइ सहज सुलझेला।।
चेतन तू तिहुँकाल... ।।3।।

– कविवर पण्डित बनारसीदासजी

छहढाला प्रवचन

सम्यक्त्वी की अंतरंग दशा एवं महिमा

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम पै सुरनाथ जजै हैं।।
गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है।
नगरनारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है।।१५।।
प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी;
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।
तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी;
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुखकारी।।१६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

चार गतियों में उनके योग्य जीवों के भाव होते हैं, जीव को एक गति में से दूसरी गति में पुन: जन्म अपने भाव के अनुसार होता है, कोई ईश्वर उसे कर्मफल देने वाला नहीं है, इन सब बातों का आस्तिक्य होना चाहिए। चार गति, पुनर्जन्म, कर्मफल इत्यादि को जो न माने, उसे तो गृहीत मिथ्यात्व है, उसको तो यह बात कैसे समझ में आयेगी ? विकल्प तोड़ना चाहता है और समभाव रखना चाहता है; परन्तु सच्चे तत्त्वनिर्णय के बिना समभाव नहीं हो सकता। मिथ्यादृष्टि को समभाव और निर्विकल्पता कैसे हो सकती है ? आत्मा में एकाग्रता बिना न तो निर्विकल्पता होती है, न समभाव।

अरे, मूर्ख लोग तो भगवान महावीर को ईसा-बुद्ध या गांधी के साथ मिलाकर उनकी कक्षा में बिठाते हैं, ऐसे लोगों ने न महावीर को पहचाना है, न जैनधर्म को; उनकी दृष्टि तो जैनधर्म से बिलकुल विपरीत है। सर्वज्ञ का जैनमार्ग तो कोई अद्भुत अलौकिक, जगत् से भिन्न तरह का है, अन्य किसी मार्ग के साथ उसका समन्वय नहीं

हो सकता। यह तो भगवान का मार्ग है और भगवान बनने का मार्ग है। प्रत्येक जीव सर्वज्ञस्वभावी परमात्मा है; अपने ऐसे स्वरूप की पहचान होने पर भी जब तक राग का सर्वथा अभाव नहीं होता, तब तक ऐसे ज्ञानी जीव का भी पुनर्जन्म होता है; परन्तु वह उत्तम गति में ही होता है।

सम्यग्दर्शन होने के बाद उत्तम देव और उत्तम मनुष्य के अतिरिक्त संसार का छेद हो जाता है। सम्यग्दृष्टि जहाँ भी जाता है, वहाँ ओजस्वी, तेजस्वी, प्रतापवंत, विद्यावंत, वीर्यवंत, उज्ज्वल, यशस्वी, वृद्धिवंत, विजयवंत, महान कुलवंत, चतुर्विध पुरुषार्थ का स्वामी और मानवतिलक होता है अर्थात् समस्त मनुष्यों में समान शोभा पाता है, समस्त लोक में उसका आदर होता है; चक्रवर्ती-तीर्थंकर आदि बड़े-बड़े पद सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं और ऐसे उत्तम पुण्यपद पाकर, उसे भी छोड़कर, रत्नत्रय की पूर्णता करके मोक्षपद पाते हैं। सम्यग्दर्शन का ऐसा महान प्रताप है।

सम्यग्दृष्टि असंयमी हो, विषय-कषायों के भाव होते हों; किन्तु उसे अशुभ परिणाम के समय आयु का बन्ध नहीं होगा, शुभपरिणाम के समय ही आयुबन्ध होगा, क्योंकि उसको उत्तम आयु कर्म ही बँधता है; परिणाम की मर्यादा ही ऐसी है। उत्तम देव में या मनुष्य में जहाँ जायेगा, वहाँ वह सम्यग्दृष्टि जीव अंतर्दृष्टि में अपने शुद्धात्मा के सिवाय अन्य सबसे अलिप्त ही रहेगा। इन्द्रलोक के वैभव के बीच भी वह आत्मा को नहीं भूलता।

देह-मन-वाणी, कर्म पुण्य-पाप, राग-द्वेष, स्त्री, व्यापार (नोकर्म-द्रव्यकर्म-भावकर्म) ये सब होते हुए भी, उनके सामने उन सबसे पार एक सर्वोपरि चिदानंद तत्त्व भी विद्यमान है; वह देहादि सबसे पार चिदानंद तत्त्व ही मैं हूँ ह्न ऐसा धर्मी को भान है, अनुभूति है; बाह्य में सब कुछ रहते हुए भी मेरे तत्त्व में वे कुछ भी नहीं है, मेरा तत्त्व उनके साथ तन्मय नहीं हुआ, सबसे न्यारा ही है। धर्मी ऐसी शुद्धदृष्टि रखकर आत्मज्ञान के साथ-साथ व्यवहार को भी जैसा है, वैसा जान लेता है। वह रागादि तथा गृहवास को अच्छा नहीं समझता, उसे तो वह कीच जैसा समझता है। अरे, मेरे शुद्धतत्त्व की अनुभूति में से बाहर आकर बाह्य विषयों में वृत्ति जावे, सो तो वह कादव जैसी मलिन है, वह मुझे शोभा नहीं देती। जैसे रोगी को रोग का या औषधि का प्रेम नहीं है, उसे तो वह मिटाना चाहता है, वैसे ही धर्मी जीव को असंयम

का, विषयों का प्रेम नहीं है, उसे तो वह छोड़ना ही चाहता है।

इसप्रकार वह दोष को दोषरूप जानता है एवं दोषरहित शुद्धतत्त्व को भी जानता है, इसकारण रागादिभाव होने पर भी धर्मीजीव अन्तर से न्यारा है, वह अपने अतीन्द्रिय आनन्दमय चैतन्यस्वभाव में राग का प्रवेश नहीं होने देता। जैसे सज्जन मनुष्य को कैद में रहना पड़े तो उसे वह अच्छा नहीं समझता; वैसे धर्मात्मा को राग-द्वेष, पुण्य-पाप कैद जैसा लगता है; परभाव से अर्थात् गृहवासरूपी असंयम की जेल में धर्मी जीव आनन्द नहीं मानता; अपितु उसमें से छूटना ही चाहता है। सम्यग्दर्शन में मुक्ति सुख के स्वाद का नमूना चख लिया है, अत: राग के रस में उसे चैन नहीं पड़ती।

सदन निवासी तदपि उदासी तातैं आस्रव झटाझटी।
संयम धर न सकै पै संयम धारन की उर चटाचटी।।
चिन्मूरत दृग धारि की मोहे रीति लगत है अटापटी।

सम्यग्दृष्टि की दशा अलौकिक है। शास्त्रों ने दिल भर-भरकर सम्यग्दर्शन की महिमा गायी है। सम्यग्दर्शन में पूर्ण आत्मा का स्वीकार है। सम्यग्दर्शन सर्वोत्तम सुख का कारण है और वह धर्म का मूल है। श्री समन्तभद्र महाराज कहते हैं कि -

तीनकाल में तीनलोक में सम्यक्त्व सम नहीं श्रेय को।
मिथ्यात्व-सम अश्रेय को नहीं जगत में इस जीव को।।

- रत्नकरण्ड श्रावकाचार-३४

मोक्षसुख का मूल कारण सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन से रहित ज्ञान या आचरण दु:ख का ही कारण है। अज्ञानी को व्रतादि के पुण्य के साथ मिथ्यात्व का पाप भी पड़ा है। सम्यग्दर्शन के बिना जीव को सुख का अंश भी नहीं होता। सम्यग्दर्शन होते ही जीव को अपने स्वभाव के अपूर्व सुख का आस्वादन होता है, नरक में भी सम्यग्दृष्टि को ऐसे सुख का आस्वादन है, जबकि मिथ्यादृष्टि को स्वर्ग में भी सुख की झलक नहीं है। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की गाथा 51-55 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

विवरीयाभिणिवेसविवज्जियसद्दहणमेव सम्मत्तं।
संसयविमोहविब्भमविवज्जियं होदि सण्णाणं।।५१।।
चलमलिणमगाढत्तविवज्जियसद्दहणमेव सम्मत्तं।
अधिगमभावो णाणं हेयोवादेयतच्चाणं सम्मत्तं।।५२।।
सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा।
अंतरहेऊ भणिदा दंसणमोहस्स खयपहुदी।।५३।।
सम्मत्तं सण्णाणं विज्जदि मोक्खस्स होदि सुण चरणं।
ववहारणिच्छएण दु तम्हा चरणं पवक्खामि।।५४।।
ववहारणयचरित्ते ववहारणयस्स होदि तवचरणं।
णिच्छयणयचारित्ते तवचरणं होदि णिच्छयदो।।५५।।

(हरिगीत)

मिथ्याभिप्राय विहीन जो श्रद्धान वह सम्यक्त्व है।
विभरम संशय मोह विरहित ज्ञान ही सद्ज्ञान है।।५१।।
चल मल अगाढ़पने रहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है।
आदेय हेय पदार्थ का ही ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।।५२।।
जिन सूत्र समकित हेतु पर जो सूत्र के ज्ञायक पुरुष।
वे अंतरंग निमित्त हैं दृग मोह क्षय के हेतु से।।५३।।
सम्यक्त्व सम्यग्ज्ञान पूर्वक आचरण है मुक्तिमग।
व्यवहार-निश्चय से अत: चारित्र की चर्चा करूँ।।५४।।
व्यवहारनय चारित्र में व्यवहारनय तपचरण हो।
नियतनय चारित्र में बस नियतनय तपचरण हो।।५५।।

विपरीत अभिनिवेश रहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है; संशय विमोह और विभ्रम रहित ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है।

चलता, मलिनता और अगाढता रहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है; हेय और उपादेय तत्त्वों को जाननेरूप भाव सम्यग्ज्ञान है।

सम्यक्त्व का निमित्त जिनसूत्र है; जिनसूत्र के जाननेवाले पुरुषों को (सम्यक्त्व के) अंतरंग हेतु कहे हैं, क्योंकि उनको दर्शनमोह के क्षयादिक हैं।

सुन, मोक्ष के लिये सम्यक्त्व होता है, सम्यग्ज्ञान होता है, चारित्र (भी) होता है, इसलिये मैं व्यवहार और निश्चय से चारित्र कहूँगा।

व्यवहारनय के चारित्र में व्यवहारनय का तपश्चरण होता है; निश्चयनय के चारित्र में निश्चय से तपश्चरण होता है।

(गतांक से आगे ...)

विपरीताभिनिवेशरहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है। संशय, विमोह और विभ्रमरहित (ज्ञान) वह सम्यग्ज्ञान है।

चलता, मलिनता और अगाढ़तारहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है। हेय और उपादेय तत्त्वों को जाननेरूप भाव - वह (सम्यक्) ज्ञान है।

सम्यक्त्व का निमित्त जिनसूत्र है; जिनसूत्र के जानने वाले पुरुषों को (सम्यक्त्व के) अन्तरंग हेतु कहे हैं, क्योंकि उनको दर्शनमोह के क्षयादिक हैं।

सुन! मोक्ष के लिए सम्यक्त्व होता है, सम्यग्ज्ञान होता है, चारित्र (भी) होता है। इसलिए मैं व्यवहार और निश्चय से चारित्र कहूँगा।

व्यवहारनय के चारित्र में व्यवहारनय का तपश्चरण होता है; निश्चयनय के चारित्र में निश्चय से तपश्चरण होता है।

निश्चयसम्यग्दर्शन प्रकट करनेवाले जीव को जिनसूत्र बहिरंग निमित्त हैं।

जो जीव निश्चयसम्यग्दर्शन प्रकट करता है उसको कौन निमित्त होता है - इसकी पहचान इस गाथा में कराई है। सम्यग्दर्शन में निमित्त भगवान की वाणी अथवा वाणी से रचित जिनसूत्र हैं। वीतराग की वाणी ऐसा कहती है कि कारणपरमात्मा

धर्म के लिए उपादेय है तथा पुण्य-पाप दोनों हेय हैं और त्रिकालीस्वभाव के आश्रय से धर्म होता है। वीतराग की वाणी का तात्पर्य ऐसा है कि ज्ञायकस्वभाव के लक्ष से श्रद्धा-ज्ञान-वीतरागता प्रकट होती है; किन्तु किसी निमित्त से अथवा पुण्य से धर्मदशा प्रकट नहीं होती। इसप्रकार यथार्थ स्वरूप प्ररूपक जिनसूत्र हैं और निश्चयसम्यग्दर्शन प्रकट करने वाले को यह बाह्य निमित्त हैं।

निश्चयसम्यग्दर्शन प्रकट करनेवाले जीव को ज्ञानी धर्मात्मा अन्तरंग निमित्त हैं।

अब, सम्यग्दर्शन प्रकट होने में अन्तरंग निमित्त बताते हैं। जिनसूत्र के जाननेवाले पुरुष अन्तरंग निमित्त हैं। जिनसूत्र के मात्र शब्द निमित्त नहीं होते, अपितु जिनसूत्र के रहस्य को जानकर तदनुसार अन्तरंग परिणमन को प्राप्त ज्ञानी पुरुष जिन्होंने स्वयं में सम्यग्दर्शन प्रकट कर लिया है, वे ही दूसरे के लिए सम्यग्दर्शन में अन्तरंग निमित्त हैं। ज्ञानी पुरुष और उनकी वाणी दोनों ही यद्यपि पर हैं - अन्तरंग नहीं; तथापि वाणी और ज्ञानी पुरुष इन दोनों निमित्तों में भेद-प्रदर्शन के लिए वाणी को बाह्य और ज्ञानी को अन्तरंग निमित्त कहा है। यद्यपि ज्ञानी पुरुष पर हैं, फिर भी वे क्या कहना चाहते हैं उस आत्मिक अभिप्राय को उनके समक्ष उपस्थित धर्म प्राप्त करनेवाला जीव जब पकड़ लेता है और अभिप्राय की पकड़ में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति हो जाती है, तब उस ज्ञानी पुरुष को जिससे उपदेश मिला है, अन्तरंग हेतु अथवा निमित्त कहा जाता है। **(क्रमशः)**

आगामी कार्यक्रम...

10वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिविरों का आयोजन

भिण्ड (म.प्र.) में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 10वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन दिनांक 5 जून से 14 जून 2014 तक किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के 101 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। अत: इसमें लगभग 175 विद्वानों की आवश्यकता है।

अतएव जो महानुभाव बालबोध भाग 1,2,3 व वीतराग विज्ञान भाग 1,2,3 व छहढाला आदि पढा सकते हैं, हमें मोबाईल नं. 09826646644 (डॉ. सुरेश जैन) या 9826472529 (पुष्पेन्द्र जैन) व ई-मेल : kksmt.bhd@gmail.com पर सूचित करने की कृपा करें।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : ज्ञानी को अशुभभाव से बचने के लिए शुभभाव आता है- इसका तात्पर्य क्या है ?

उत्तर : ज्ञानी को जो शुभभाव आता है, वह अशुभ से बचने के लिए आता है-ऐसा जो कहने में आता है, वह तो लोगों को जरा सन्तोष हो जाय; इसलिए कहने में आता है। वास्तव में देखा जाय तो वह शुभराग उसके अपने आने के काल में ही आता है।

प्रश्न : तो फिर प्रायश्चित्त क्यों करने में आता है?

उत्तर : यह सब कथनमात्र की बात है, कथन की पद्धति है । वास्तव में तो ऐसे विकल्प आने का काल था; अत: वही आया और वाणी भी ऐसी ही निकलने वाली थी; अत: वही निकली। अधिक सूक्ष्म में जावें तो वास्तव में शुभविकल्प तथा प्रायश्चित्त की वाणी निकलना अथवा गुरुवाणी निकलना, यह सब पुद्गल का स्वाभाविक कार्य है - आत्मा का कार्य नहीं, आत्मा तो मात्र ज्ञानस्वभावी है।

प्रश्न : स्वानुभव में से विकल्प में आने के पश्चात् ज्ञाता-दृष्टा में कुछ फेर पड़ता है क्या?

उत्तर : स्वानुभव में से जब विकल्प में आता है, तब भी केवली की भाँति ज्ञाता-दृष्टा ही है। अनुभव में केवली के समान ज्ञाता-दृष्टा है और विकल्प में आ जाने पर भी ज्ञाता-दृष्टा ही है। विकल्प आता है, वह भी छूटा हुआ ही है। केवली पूर्ण ज्ञाता-दृष्टा हैं और यह नीचेवाला अल्प ज्ञाता-दृष्टा है; परन्तु हैं तो दोनों ज्ञाता-दृष्टा ही।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि ज्ञानी की दृष्टि शुभाशुभ के काल में भी ध्रुव पर ही रहती है या भटक जाती है ?

उत्तर : जिसको द्रव्यदृष्टि प्रकट हुई है - ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव की दृष्टि सदा ध्रुवतल पर ही रहती है। स्वानुभूति के काल में - ध्यान में, आनन्द के काल में, विकल्प छोड़कर अनुभव के काल में और शुभ-अशुभ में उपयोग हो तब भी दृष्टि तो ध्रुवतल के ऊपर ही होती है। सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती 96 हजार स्त्रीवृन्द में खड़ा हो; तथापि उसकी दृष्टि तो ध्रुवतल में ही रहती है, विकल्प पर नहीं । बाहुबली के साथ भरत का युद्ध हुआ,

दोनों सम्यग्दृष्टि थे, दोनों का उपयोग उससमय युद्ध में था; तथापि उनकी दृष्टि उससमय ध्रुवतल से खिसकी नहीं थी। दृष्टि तो सहजपने ध्रुवतल के ऊपर ही थी। शुभशुभ के उपयोग काल में भी दृष्टि ध्रुव पर से हटती नहीं है। श्रेणिक राजा क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे, कारागार में माथा फोड़कर मरे थे; तथापि उस काल में भी ध्रुवतल के ऊपर से उनकी दृष्टि छूटी नहीं थी। द्रव्यदृष्टि की महिमा अपार है।

प्रश्न : ज्ञानी को भी शुभराग आता है तो क्या वह शुद्धात्मा को भूल जाता है ?

उत्तर : मुमुक्षु जीव शुभराग में जुड़ान करता है; किन्तु शुद्धात्मा की शोधकवृत्ति का अभाव नहीं होता। मुमुक्षु जीव को दया-दान-पूजा-भक्ति आदि के शुभभाव आते अवश्य हैं; परन्तु उसकी वृत्ति और झुकाव शुद्धात्म की तरफ ही रहता है, शुभभाव में तल्लीनता नहीं होती। ज्ञानी के जिनस्वरूपी भगवान आत्मा की शोधकवृत्ति नहीं जाती तथा शुद्धात्मारूप ध्येय छोड़कर शुभराग का आग्रह नहीं रहता। शुभराग से लाभ होगा - ऐसा नहीं मानता। पर्याय की अशुद्धता भी नहीं भूलता और स्वच्छन्द भी नहीं होता।

प्रश्न : शुभराग को ज्ञानी हेय मानता है, तो फिर षोडशकारण भावनाओं को क्यों भाता है ?

उत्तर : ज्ञानी षोडशकारण भावनाओं को भाता नहीं है; परन्तु उसे उसप्रकार का राग आ जाता है। वास्तव में ज्ञानी को भावना तो स्वरूप में स्थिर होने की ही होती है; परन्तु जब पुरुषार्थहीनता से स्वरूप में ठहर नहीं पाता, तब हेयबुद्धि से शुभराग आ जाता है। विचारपूर्वक देखा जाय तो ज्ञानी उन भावनाओं का जाननेवाला ही है - कर्ता नहीं।

प्रश्न : ज्ञानी परवस्तु अथवा राग में फेरफार करने की बुद्धि नहीं रखता - यह तो ठीक; किन्तु अपनी निर्मल पर्याय को तो करना चाहता है ?

उत्तर : ज्ञानी को अपनी निर्मल पर्याय को फेरने के ऊपर भी लक्ष्य नहीं है। द्रव्यस्वभाव के सन्मुख होने पर पर्याय स्वयं निर्मलपने फिर जाती है। धर्मी पर को - शरीर की क्रिया को फेरता नहीं, विकल्प को फेरता नहीं और जिस समय जो पर्याय होती है, उसे भी फेरने की बुद्धि नहीं अर्थात् उसके तो पर्याय के ऊपर की दृष्टि ही छूट गई है। मात्र वस्तुस्वभाव के सन्मुख बुद्धि होने पर राग टलकर वीतरागरूप में पर्याय पलट जाती है। कुछ भी फेरफार नहीं करना है। वस्तुस्वभाव को जैसा का तैसा रखकर स्वयं स्वभावदृष्टि से निर्मलरूप में पलट जाता है। इसके अतिरिक्त पदार्थों में अथवा अपनी अवस्था में कुछ भी फेरफार करने की बुद्धिवाला मिथ्यादृष्टि है।

विरागजी का विज्ञापन

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष के छात्रों का –

विदाई समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 31 मार्च को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित दो सत्रों के विदाई समारोह में प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती श्रीकान्ता छाबड़ा एवं कु. प्रतीति पाटील इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी एवं विशिष्ट अतिथियों ने विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि अभी तक तो आप यहाँ अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे हैं। उन्होंने आपको सर्वप्रकार से योग्य बनाया है। अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी है। अत: अब उसके लिए तैयार हो जाओ। इसप्रकार डॉ. भारिल्ल ने सभी विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और दोनों दादा के अभिनन्दन ग्रन्थ व डॉ. भारिल्ल कृत तत्त्वार्थमणिप्रदीप ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया।

महाविद्यालय के सत्र (2013-14) हेतु विद्यालय की पाँचों कक्षाओं में आदर्श कक्षा का पुरस्कार **उपाध्याय वरिष्ठ** कक्षा को तथा आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार **ऋषभ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ)** को दिया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा के आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से **शुभांशु जैन कोटा,** उपाध्याय वरिष्ठ से **सौरभ शाह मड़देवरा,** शास्त्री प्रथम वर्ष से **अभिषेक जैन हीरापुर,** शास्त्री द्वितीय वर्ष से **प्रशांत जैन अमरमऊ** और शास्त्री तृतीय वर्ष से **अभय जैन सुनवाहा** को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विशेष सहयोगी के रूप में पृथक् से चिकित्सा सेवा की व्यवस्था में सहयोग करने हेतु **प्रतीक शाह मुम्बई** को पुरस्कृत किया गया।

आदिनाथ जयन्ती संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) 25 मार्च 2014 : स्थानीय सम्पूर्ण जैन समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था अखिल जैन समाज भगवान महावीर जयन्ती महोत्सव समिति द्वारा प्रथम बार आयोजित आदिनाथ जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने धाराप्रवाह प्रवचन में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

यहाँ महावीर भवन में आयोजित इस समारोह में बोलते हुए आपने अपनी तर्कपूर्ण शैली में राजा ऋषभदेव के व्यक्तित्व व कर्तृत्व के विभिन्न पहलुओं की गहन व्याख्या प्रस्तुत की।

इस अवसर पर एक विशाल रथयात्रा का भी आयोजन किया गया जो कि महावीर भवन पहुंचकर सभा में परिवर्तित हो गई और वहाँ तीर्थंकर आदिनाथ के कलशाभिषेक भी संपन्न हुये।

प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिल्ली में –

युवा फैडरेशन एवं स्नातक परिषद् का अधिवेशन

● देश की राजधानी दिल्ली में बृहद्स्तर पर आयोजित आयोजित होने वाले प्रशिक्षण शिविर के मध्य **दिनांक 24 मई 2014** को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का **37वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन** आयोजित होने जा रहा है।

● साथ ही पण्डित टोडरमल **स्नातक परिषद का अधिवेशन** रविवार दिनांक **25 मई** को दोपहर 2.00 बजे से आयोजित होने जा रहा है।

उक्त दोनों अधिवेशनों में युवा फैडरेशन एवं स्नातक परिषद् के सभी सदस्य सादर आमंत्रित हैं। दिल्ली आने हेतु अपने टिकिट अभी से आरक्षित करा लेवें एवं दिल्ली में आवास व्यवस्था हेतु आवास फार्म भी भरकर दिल्ली शीघ्र भिजवायें।

प्राकृत भाषा में अखबार प्रारंभ

दिल्ली : यहाँ कुन्दकुन्द भारती में प्राकृत भाषा का प्रथम अखबार **'पागद भासा'** के प्रथम अंक का विमोचन दिनांक 13 अप्रैल को किया गया। विश्व में प्रथम बार निकलने वाले इस अखबार के संस्थापक संपादक डॉ.अनेकान्त कुमार जैन हैं तथा प्रकाशक जिन फाउन्डेशन, नई दिल्ली है।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम आदीश्वरम् में पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव एवं नूतन शिखर पर कलशारोहण का आयोजन आदिनाथ जयन्ती के अवसर पर दिनांक 23 से 25 मार्च तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ सोल्लास संपन्न हुआ।

दिनांक 23 मार्च को कलश शोभायात्रा के पश्चात् ध्वजारोहण श्री कमलकुमार पदमकुमार हाथीशाह परिवार चन्देरी-भोपाल द्वारा हुआ। आदिनाथ पंचकल्याणक विधान के आमंत्रणकर्ता श्री अमोलकचन्द विनोदकुमार कठरया परिवार थे।

दिनांक 24 मार्च को प्रात: श्री यागमण्डल विधान एवं दिनांक 25 मार्च को शिखरशुद्धिपूर्वक कलशारोहण का सौभाग्य पण्डित पवनजी शास्त्री किशनगढ को मिला। साथ ही मूलनायक भगवान आदिनाथ पर छत्र एवं चंवर चढाये गये।

कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्रजी टीकमगढ एवं पण्डित सतीशजी पिपरई ने शुद्धाम्नायानुसार सम्पन्न कराये। तीनों विद्वानों के प्रवचनों के अतिरिक्त पूजन-विधान एवं सांस्कृतिक में कु. परिणति पाटील का सहयोग मिला।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में श्री दिग.जैन स्वाध्याय मण्डल द्वारा दिनांक 7 से 26 मार्च तक गुणस्थान विवेचन की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा दोनों समय गुणस्थान विवेचन पुस्तक के आधार पर चारों अनुयोगों के आगमपरक सुमेलपूर्वक प्रथम से छठवें गुणस्थान तक कक्षायें ली गईं। विशेष रूप से गृहस्थ अव्रती, देशव्रती श्रावक तथा मुनिराजों के निश्चय-व्यवहार रूप धर्म का सभी अपेक्षाओं से सूक्ष्मतापूर्वक विवेचन किया गया।

निबन्ध लिखकर भेजें

कोटा (राज.) : यहाँ दिग. जैन सोशल ग्रुप 'वर्धमान' द्वारा '**आधुनिकता की दौड़ में सिमटते संस्कार**' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी शब्द सीमा 250-300 है। विजेता को प्रथम पुरस्कार 2000/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार 1500/- रुपये, तृतीय पुरस्कार 1000/- रुपये एवं सान्त्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। साथ ही दशलक्षण पर्व के दौरान होने वाले कार्यक्रम में दिनांक 6 सितम्बर को सम्मानित किया जायेगा। निबन्ध भेजने की अंतिम तिथि 15 अगस्त है।

डाक द्वारा भेजने का पता : (1) श्रीमती सीमा जैन, द्वारा सीमा आईसक्रीम पार्लर, (दिनेश गैस एजेन्सी के पास), 1-ट-13, विज्ञान नगर, कोटा फोन 0744-2422227, 09462311767
(2) श्रीमती रेखा जैन, बी-540, इन्द्राविहार, कोटा फोन 0744-2414101, 09460238455

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयंती के अंतर्गत अष्टम आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, श्री बीस तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र विधान एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का तृतीय दीक्षांत समारोह दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल तक अनेक विशेषताओं सहित सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित सुबोधजी सिवनी, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, विदुषी राजकुमारी जैन दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त आत्मार्थी कन्याओं द्वारा प्रतिदिन प्रवचन एवं बालकक्षाओं का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 5 अप्रैल को रात्रि में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का तृतीय दीक्षांत समारोह हुआ, जिसमें आत्मार्थी कन्याओं ने विदाई के अवसर पर अपने मार्मिक उद्गार व्यक्त किये। 6 अप्रैल को गुरुदेवश्री की 125वीं जन्म जयंती (उपकार दिवस) अत्यंत उल्लासपूर्वक मनाया गया। शिविर में श्री नरेन्द्रजी दिल्ली, श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री सुमतिकुमारजी सेठिया दिल्ली एवं श्री जयपालजी जैन दिल्ली, श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली इत्यादि महानुभावों का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम में लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के कार्य श्री अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित रमेशजी गायक द्वारा संपन्न हुये।

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 7वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश-प्रक्रिया 18 मई से 4 जून तक दिल्ली में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क - पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 8104615220, बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.); पण्डित रतन चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता -** 565, महावीर नगर प्रथम, कोटा (राज.) 324005

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

(1) जो छात्र घर बैठे-बैठे जैनदर्शन का अध्ययन करना चाहते हैं, वे श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के द्विवर्षीय/पंचवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। प्रवेश फार्म जयपुर कार्यालय से मंगा लेवें। **(2)** जून 2014 में मुक्त विद्यापीठ के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाऐं आयोजित होंगी, सभी छात्र उसकी तदनुसार तैयारी करें। **- ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक)**

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 36 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 18 मई से 4 जून 2014 तक दिल्ली** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

ह्न पीयूष शास्त्री एवं सोनू शास्त्री

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट
विश्वासनगर नई दिल्ली द्वारा आयोजित

48वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 18 मई 2014 से 4 जून 2014 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 18 मई से 4 जून 2014 तक देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित होने जा रहा है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर दिल्ली में पहली बार लग रहे इस प्रशिक्षण शिविर में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया ध्यान दें - दिल्ली महानगर में आवास की व्यवस्था करना प्रयत्नसाध्य एवं व्ययसाध्य कार्य है; अत: आयोजन समिति ने यह निर्णय किया है कि जिन शिविरार्थियों के आवास फार्म 15 अप्रैल तक समिति के पास आ जावेंगे, समिति उनकी समुचित व्यवस्था कर सकेगी। **15 अप्रैल के बाद प्राप्त होने वाले आवास फार्मों पर विचार करना संभव नहीं होगा;** अत: प्रशिक्षण शिविर में आने वाले प्रशिक्षणार्थियों/शिविरार्थियों से निवेदन है कि वे अपने आवास फार्म 15 अप्रैल के पहले दिल्ली/जयपुर भिजवाने का कष्ट करें।

आवास फार्म www.kundkundtrust.com/kundkundtrust.org पर उपलब्ध है। आप ई-मेल, डाक द्वारा या निम्न पतों पर संपर्क करके भी मंगा सकते हैं। ये फार्म आप वेबसाइट पर ऑनलाइन भी भर सकते हैं।

हार्दिक अनुरोध :- श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र - (1) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन-0141-2705581, 2707458 Fax : 0141-2704127
Email-ptstjaipur@yahoo.com website : www.ptst.in
(2) श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट, 2/76, भीम गली, विश्वास नगर, दिल्ली-32 फोन-9810094987, 9312558753, 9582883020, 9350222646 (मंगलसेन जैन), 9212199105 Email-kundkundtrust@gmail.com; website : www.kundkundtrust.com, www.kundkundtrust.org

वीतराग-विज्ञान (मई-मासिक) ● 26 अप्रैल 2014 ● वर्ष 32 ● अंक 10

दादा का विदेश कार्यक्रम